2022-23

महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय

किला भवन, इन्दौर

PEACE

स्थापना वर्ष–1963

शैक्षणिक भ्रमण

ऐतिहासिक स्थल – मांडवगढ़

प्रायोजक – वर्ल्ड बैंक

आयोजक – इतिहास विभाग

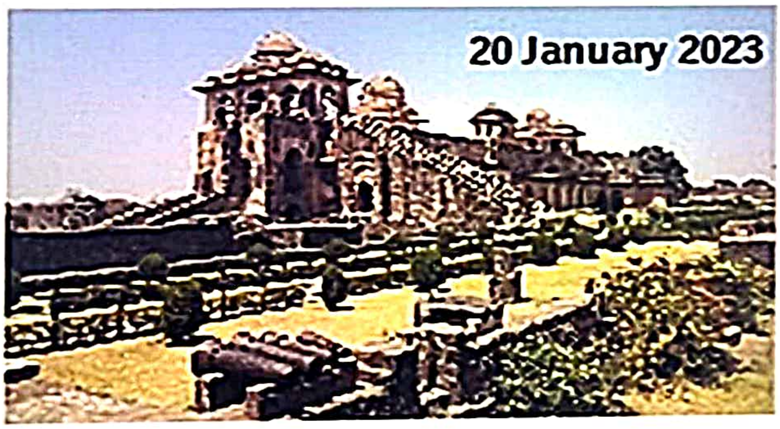

विभागाध्यक्ष – डॉ. प्रेरणा ठाकुर

प्राध्यापक – डॉ. उषा महोबिया

प्राध्यापक – प्रो. सुनीता जैन

मांडवगढ़ – ऐतिहासिक शैक्षणिक भ्रमण

यात्राएँ सदैव ज्ञान बढ़ाती है, शिक्षा देती है व्यक्ति को परिष्कृत करती है। अतः इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए दिनांक 20 जनवरी 2023 को इतिहास विभाग द्वारा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। यह भ्रमण वर्ल्ड बैंक द्वारा प्रायोजित था। जिसमें ऐतिहासिक स्थल के रूप में मांडवगढ़ का चयन किया गया। मांडवगढ़ स्थल, इन्दौर शहर से 97 किलोमीटर दूर स्थित है जो कि धार जिले के अंतर्गत आता है तथा परमार कालीन तथा दिल्ली सल्तनत काल एवं मुगलकालीन वैभवशाली नगर रहा है जिसे आनंद की नगरी अर्थात City of Joy भी कहा जाता हैं। अतः इतिहास विभाग द्वारा स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं की लगभग 40 छात्राओं द्वारा यह यात्रा की गई। विभागाध्यक्ष डॉ. प्रेरणा ठाकुर तथा डॉ. उषा महोबिया एवं प्रो. सुनीता जैन के नेतृत्व में दिनांक 20/01/2023 को प्रातः 9 बजे इस विभाग द्वारा महाविद्यालय से मांडव की यात्रा हेतु प्रस्थान किया गया। महू से आगे मानपुर के निकट छात्राओं को स्वल्पाहार करवाया गया।

जहाजमहल –

महू मानपुर के सुन्दर रास्तों को देखते हुए हम सभी ने मानपुर में रूककर स्वल्पाहार किया। अंताक्षरी तथा Group of Monuments जहाज महल पर पहुँचे। प्रो. उषा मेडम ने 2 छात्राओं के साथ जाकर टिकिट खरीदे तत्पश्चात् हमने सर्वप्रथम माण्डू में स्थित जहाजमहल के अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य का दर्शन किया गया। प्रवेश करते ही पानी के जहाज की तरह सामने खड़ा जहाज महल था स्थापत्य कला का सुन्दर नमूना। (यह महल दो झीलों कपूर तालाब और मुंज तालाब के बीच बना हुआ है जो देखने में जहाज के जैसा दिखता है)

13वीं शताब्दी में माण्डू शहर का नाम मालवा के सुल्तानों द्वारा खुशियों का शहर रखा गया था।

सन् 1526 में गुजरात के बहादुर शाह ने माण्डू के किले जहाज महल पर अपना अधिकार जमा लिया था। माण्डू पर कई राजाओं ने राज्य किया पंरतु बाज बहादुर एकमात्र शासक बने जिन्होंने माण्डू पर सबसे ज्यादा समय तक अपना अधिकार जमाए रखा।

यह तालाब में तैरते हुए जहाज की तरह प्रतीत होता हैं। जहाजनुमा 100 मीटर लम्बी संरचना को दूर से देखने पर यह पानी में खड़े हुए एक विराट (विशाल) जहाज के समान दिखाई देता हैं।

हिण्डोला महल –

हिंडोला महल का निर्माण होशंगशाह के शासक के समय शुरू हुआ था और गयासुद्दीन के शासनकाल में समाप्त हुआ था। हिण्डोला महल माण्डू का बहुत ही आकर्षक और लोकप्रिय पर्यटन स्थल हैं जिसका निर्माण बलुआ पत्थरों से किया गया था। हिण्डोला महल की टेढ़ी दीवारों के कारण इस महल को हिण्डोला महल या झूला महल कहा जाता है। महल के चारों और बहुत ही सुन्दर प्राकृतिक दृश्य और अद्भूत आकृतियॉ बनी हुई हैं।

चंपा बावड़ो –

14वीं 15वीं शताब्दी में निर्मित इस बावड़ी का पानी चम्पक पुष्पक की तरह सुगंधित रहता था। इसकी भूयोजना अष्टाकार है यह ऊपर की ओर गोलाकार है। बावड़ी प्राचीन समय से ही भारत में पानी का जल संग्रह का स्थान होता है जो किसी गहरे कुऍ से जुड़ा होता है। चम्पा बावड़ी पानी के स्त्रोत के साथ सुरक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें नीचे की ओर तिमंजिला तहखाना है। जिसका गुप्त रास्ता बाहर मुंज तालाब की ओर खुलता है। यह आक्रमण के समय सुरक्षित बाहर निकलने के काम आता रहा होगा। तहखाने के कमरे गरमी में ठंडे और हवादार रहते हैं।

शाही हम्माम –

बावड़ी के नजदीक ही हम्मान या स्नानागार वे जिसमें ठंडे व गरम पानी की सुविधा रहती थी। इसकी छत में सितारे की आकृतियॉ कटी है जिससे हवा और प्रकाश हम्माम में बना बना रहता था।

होशंगशाह का मकबरा –

होशंगशाह का मकबरा माण्डू का बहुत ही आकर्षक स्थान हैं। जहॉ प्रसिद्ध सुल्तान होशंगशाह की समाधि है। इसी मकबरे से प्रेरित होकर शाहजहॉ ने ताजमहल का निर्माण करवाया था। होशंगशाह का मकबरा संगमरमर से बना हुआ हैं। इसमें कब्र के सबसे ऊपर आधे चन्द्रमा के मुकुट के समान संरचना है जो कि अफगानी शैली में बनी हुई हैं।

होशंगशाह माण्डू का ख्यातनाम सुल्तान था। उसका मकवरा भी उसकी ख्याति के अनुरूप हैं। यह मकबरा विशाल गुम्बद के साथ संगमरमर का बना हैं। इसके निर्माण के बारे में कहा जाता है कि 1405 ई. में माण्डू के सुल्तान होशंगशाह गौरी ने करवाया था। यह मकबरा दो भागों में विभक्त है। इसका पश्चिम भाग धर्मशाला के नाम से जाना जाता है। धर्मशाला में पिलरों पर त्रिशूल, हाथी, सूंड सहित अन्य आकृतियॉ भी उभरी नजर आती हैं। इस मकबरे के अन्दर एक जगह पर पानी की बूंद सदैव गिरती रहती है। इसका कारण नमी होना बताया गया है। यह भी बताया गया कि इसी मकबरे से प्रेरित होकर शाहजहॉ ने ताजमहल बनाने से पूर्व शिल्पकारों को यहॉ भेजा था।

जामी मस्जिद –

यह भारत की पुरानी मस्जिदों में से एक है इसका प्रवेश द्वार विशाल तथा आकर्षक है तथा मेहराबदार बरामदा तथा मध्य का खुला ऑगन इसे अत्यधिक आकर्षक बना देता है। यह मीनार रहित मस्जिद है। इसका निर्माण होशंगशाह द्वारा शुरू किया जिसे बाद में मेहमूद खिलजी ने 1554 के पूर्व किया।

नीलकण्ठ मंदिर –

इस स्थल के निर्माण के बारे में कहा जाता है कि सम्राट अकबर ने अपने सूबेदारों शाह बुदाल खॉ से कहकर करवाया था। मंदिर की दीवार पर फारसी लेख है कि महान शासक सम्राट अकबर अपने शासन के 44वें साल यानि हिजरी सन् 1008–1599–1600 ईस्वी में दकन (दक्षिण) की जगह जाते हुए इस स्थान से गुजरा। इसमें फारसी रूबाई पंक्तियॉ भी लिखी है। मंदिर के आंतरिक भाग में शिवलिंग हैं।

रानी रूपमती का मंडप –

रानी रूपमती का महल बलुआ पत्थर से बने मण्डप की सुन्दर संरचना हैं। यह माण्डू का सबसे ज्यादा आकर्षित करने वाला किला हैं। रानी रूपमती और माण्डू के राजा बाज बहादुर की प्रेम कहानी के लिए इस महल को जाना जाता हैं। माना जाता है कि रानी रूपमती नर्मदा नदी के दर्शन किए बिना पानी का एक घूंट भी नहीं पीती थी। यही प्रमुख कारण था जिसकी वजह से बाज बहादुर ने नर्मदा नदी के तट पर इस महल का निर्माण करवाया जहॉ से रानी नर्मदा नदी के दर्शन कर सके। यहॉ की मेहराबें सिंहमुखी हैं।

बाज बहादुर महल –

बाज बहादुर महल का निर्माण राजा बाज बहादुर द्वारा 16वीं शताब्दी में कराया गया था। बाज बहादुर महल माण्डू के सबसे आकर्षक और दर्शनीय स्थलों में से एक है। बाज बहादुर महल उँचे छतों और बड़े–बड़े हाल के साथ अपने सुन्दर आंगनों के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं।

बाज बहादुर महल रानी रूपमती महल के नीचे स्थित है जिसे रानी रूपमती के मण्डप से आसानी से देखा जा सकता हैं। माण्डू के अंतिम स्वतंत्र नेता बाज बहादुर के इस महल में इस्लामिक शैली देखने को नहीं मिलती बल्कि यह राजस्थानी शैली में डिजाईन किया गया महल हैं।

तवेली महल –

इसमें प्राचीन मूर्तियों के भग्नावशेष तथा मध्यकालीन युग के फोटोग्राफ का संग्रह है।

दोपहर 3 बजे एम.पी ट्यूरिज्म के रिसोर्ट में सभी ने दोपहर का भोजन किया तथा चाह पी तत्पश्चात् 4 बजे रूपमती और बाजबहादुर के महल का सुरम्य दृश्य देखते हुए शाम 6 बजे हम सभी ने मांडव की सुरम्य वादियों से विदा ली। आसपास के सुंदर प्राकृतिक दृश्यों को निहारते हुए अस्ताचल को जाते हुए सूर्य के साथ ही हम भी इन्दौर लौट आये। महाविद्यालय के गेट पर ही बस से उतरकर छात्राओं ने अपने पालकों के साथ घर को प्रस्थान किया यादगार ट्रिप की स्मृति के साथ।

स्थापना वर्ष - 1963

शा. महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

किला मैदान इन्दौर (म.प्र.) 452006

आयोजक - इतिहास विभाग

प्रायोजक - म.प्र. उच्च शिक्षा गुणवत्ता उन्नयन परियोजना

प्रमाण पत्र

शैक्षणिक भ्रमण

प्रमाणित किया जाता है कि ______________________ ने महाविद्यालय के इतिहास विभाग द्वारा ऐतिहासिक स्थल मांडव के शैक्षणिक भ्रमण में दिनांक 20 जनवरी 2023 में सक्रिय सहभागिता की। हम आपके उज जवल भविष्य कि कामना करते है।

डॉ. प्रेरणा ठाकुर
विभागध्यक्ष
इतिहास विभाग

डॉ. चन्दा तलेरा जैन
प्राचार्य एवं सरक्षक

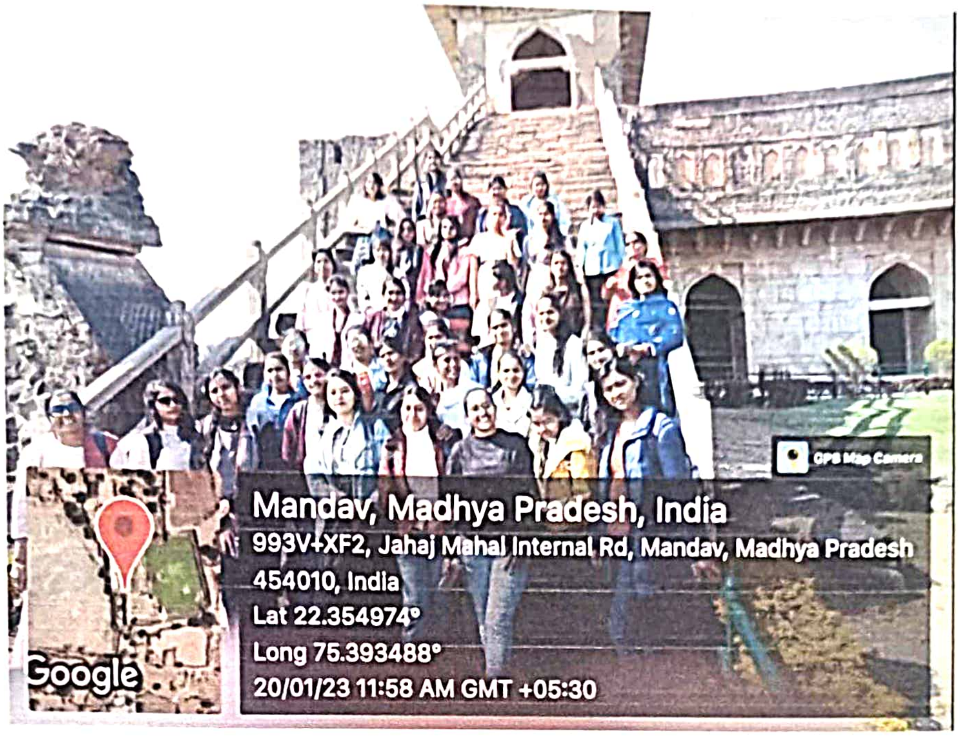
GPS Map Camera
Mandav, Madhya Pradesh, India
993V+XF2, Jahaj Mahal Internal Rd, Mandav, Madhya Pradesh 454010, India
Lat 22.354974°
Long 75.393488°
20/01/23 11:58 AM GMT +05:30
Google

JAIMALHAR